प्रथम सत्र

अभ्यास प्रश्नपत्र प्रथम (2021-22)

हिन्दी पाठ्यक्रम- अ (कोड-002)

कक्षा - नवीं

निर्धारित समय- 90 मिनट अधिकतम अंक-40

सामान्य निर्देश-

इस प्रश्नपत्र में कुल तीन खंड हैं- खंड-क, खंड-ख और खंड-ग ।

इस प्रश्नपत्र में कुल 10 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों में उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-क में कुल 20 प्रश्न पूछे गए हैं, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए केवल 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-ख में कुल 20 प्रश्न पूछे गए हैं, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए केवल 16 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-ग में कुल 14 प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही उत्तर वाले गोले को भली प्रकार से केवल नीली या काली स्याही वाले बॉल पॉइंट पेन से ही ओ.एम.आर. शीट में भरें।

खंड – क

. (अपठितअंश) अधिकतम अंक-10

1. नीचे दो अपठित गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर
लिखिए- 1x5=5

प्रकृति ने हमें इतना कुछ दिया है कि हम सोच भी नहीं सकते। इस धरती पर जीवन प्रकृति के कारण ही सम्भव है। ब्रह्माण्ड में और भी कई ग्रह हैं लेकिन इस प्रकृति के बिना वहाँ जीवन सम्भव नहीं है। इस प्रकार प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। धरती पर हर स्थान पर प्रकृति एक जैसी नहीं है। स्थान के अनुसार प्रकृति अपना रूप-रंग बदल लेती है और उस स्थान के अनुसार हमें संसाधन उपलब्ध कराती है साथ ही हमारे मन, हमारी आँखों को सुकून प्रदान करती है। प्रकृति हमें इतना कुछ देती है तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हम इसके महत्व को जानते हुए इसका सम्मान करें और इसे अपने स्वार्थ के लिए उजाड़ें नहीं। जिससे मनुष्य की संतानें भी इसकी सुंदरता का आनन्द ले सके और इसका लाभ उठा सकें अन्यथा एक दिन वह होगा जब इस प्रकृति के सौंदर्य को लोग कम्प्यूटर पर ही देख और महसूस कर पायेंगे। हमारे चारों और हम

जो भी प्राकृतिक वस्तुएं देखते हैं वह प्रकृति ही है। प्रकृति से हमें वह सब मिलता है जो इंसान के जीवन के लिए अतिआवश्यक है। जैसे साँस लेने के लिए वायु (ऑक्सीजन), पीने के लिए पानी और पेट भरने के लिए खाद्य सामग्री। लेकिन इंसान अपनी और अधिक चाह के लिए प्रकृति का दोहन करता जा रहा है ओर इस धरती को प्रकृति के सौंदर्य से वंचित कर रहा है। समय हमें चेता रहा है कि यदि हमने अभी इस विषय पर ठोस कदम न उठाये तो वह दिन दूर नहीं जब इस धरती पर जीवन संभव न हो पायेगा। इस प्रकृति में जब तक संतुलन है तभी तक हमारे जीवन में भी संतुलन है। जहाँ इस प्रकृति का संतुलन खराब होगा वहीं हमारे जीवन का संतुलन भी डगमगाने लगेगा। यह धरती जो हमें इतनी सुंदर लगती है वह इस प्रकृति के कारण है अन्यथा एक निर्जन ग्रह के अलावा कुछ न हो।

(i) प्रकृति अपना रूप रंग किसके अनुसार बदल लेती है?

(क) गुण।

(ख) स्थान।

(ग) दोष।

(घ) जल।

(ii) सांस लेने के लिए हमें किस की आवश्यकता है?

(क) ऑक्सीजन।

(ख) हाइड्रोजन।

(ग) नाइट्रोजन।

(घ) कार्बन डाइऑक्साइड।

(iii) धरती को प्रकृति के सौंदर्य से वंचित कौन कर रहा है?

(क) प्रकृति का सृजन।

(ख) प्रकृति का दहन।

(ग) प्रकृति का संवर्थन।

(घ) प्रकृति का दोहन।

(iv) हमारे जीवन में संतुलन के लिए क्या आवश्यक है?

(क) पानी।

(ख) हवा।

(ग) प्रकृति में संतुलन।

(घ) घर।

(v) धरती की सुंदरता किसके कारण है?

(क) नदी के कारण।

(ख) पहाड़ के कारण।

(ग) प्रकृति के कारण।

(घ) वनस्पतियों के कारण।

अथवा

शिक्षा मनुष्य को सत्य की पहचान कराने वाली है। यह ज्ञान की आँख देती है। यह हमारी सोई प्रतिभा को जगाकर उसे कारगर बनाती है। देखा जाए, तो समूचा विश्व एक खुली पाठशाला है। हर व्यक्ति जीवनभर कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। व्यक्ति के लिए उसका अनुभव ही शिक्षा का स्वरूप है। किन्तु उम्र के पहले पड़ाव को, जिसे सामान्यतया विद्यार्थी जीवन कहते हैं यही शिक्षा के लिए उपयुक्त स्वीकार किया गया है। भारतीय दृष्टि से इसे ब्रहमचर्य आश्रम कहते हैं। यहाँ पाँच वर्ष तक बालक माता के निर्देशन में जीवन की प्रारंम्भिक बातें सीखता है। पाँच से पच्चीस वर्ष उसके लिए गुरू के यहाँ शिक्षा पाने के लिए निश्चित किए गए हैं। यह विधिवत् शिक्षा का स्वरूप है। विद्धानों का यह मानना है कि शिक्षा तो जब भी, जहाँ भी मिले, उसे हाथ बढ़ाकर स्वीकार करना चाहिए। लेकिन यहाँ हमारा उदेश्य प्रौढ़ शिक्षा की आश्वयकता और महत्व को बतलाना है। प्रौढ़ से अभिप्राय है- गृहस्थ आश्रम का व्यक्ति। दूसरे शब्दों में जिसकी उम्र पच्चीस वर्ष से अधिक हो। यदि अधिक उम्र में कोई अनपढ़ व्यक्ति अशिक्षा के कलंक को मिटाना चाहे तो वह अपने कार्य के क्षणों से कुछ अवकाश निकाल करके साक्षर (शिक्षित) हो सकता है। इससे वह अपने दैनिक कार्यों को भली भाँति और आकर्षक ढंग से पूरा कर सकता है।राष्ट्र की अनेक विकासशील नीतियों में प्रौढ़ शिक्षा नीति का शिक्षा उदेश्य यही है कि वे लोग जो अपने विद्यार्थी जीवन में विधिवत् शिक्षा नहीं पा सके। अक्षर ज्ञान तक नहीं प्राप्त कर सके, वे अपना दैनदिन जीवन सुचारू रूप से चला सकें और सामान्य लिखने पढ़ने के योग्य हो जायें। इसी उदेश्य को सामने रखकर पकी आयु वाले प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए शिक्षा योजना लागू की गई है। क्योंकि आज के प्रगतिशील युग में कोई भी व्यक्ति अशिक्षित रहकर समय के साथ नहीं चल सकता। फिर चाहे गांव हो या शहर, वह अपने देश, समाज और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के बल पर ही जुड़ सकता है। देश विदेश में जो अनेक प्रकार की प्रगति हो रही है, उन्नति विकास की योजनाएं चल रही हैं और साधन और उपकरण सामने आ रहे हैं। अशिक्षित व्यक्ति या तो उनसे अपरिचित रहता हुआ समुचित लाभ नहीं उठा पाएगा या फिर अशिक्षा के कारण ठगा जा सकता है। ऐसे में यह वर्ग स्वयं को शिक्षित बनाकर ही ठीक से जीवन योग्य हो सकता है। प्रौढ़ शिक्षा का उपयोग की दृष्टि से एक उदेश्य यह भी है कि अब तक जो लोग अनपढ़ और पिछड़े रह गए हैं, वे शिक्षा के महत्व को समझ नहीं सके और कम से कम अपनी संतान को तो आगे विकास करने का अवसर प्रदान कर सकें। चाहे कोई व्यक्ति मजदूर है अथवा

किसान या किसी भी वर्ग से संबंधित हैं, कोई भी कार्य करता हो, निश्चय ही एक विशेष स्तर की शिक्षा पाकर वह न केवल अपनी योग्यता बढ़ा सकता है, अपितु अपने में समझ बूझ पैदा कर सकता है

(i) शिक्षा मनुष्य को किस की पहचान कराती है?

(क) सत्य की।

(ख) अहिंसा की।

(ग) अपरिग्रह की।

(घ) झूठ की।

(ii) प्रौढ़ से क्या अभिप्राय है?

(क)जिनकी आयु 20 वर्ष से अधिक हो।

(ख)जिनकी आयु 21 वर्ष से अधिक हो।

(ग)जिनकी आयु 22 वर्ष से अधिक हो।

(घ) जिनकी आयु 25 वर्ष से अधिक हो।

(iii) पकी आयु वाले व्यक्तियों को दी जाने वाली शिक्षा को किस नाम से जानते हैं?

(क) शिशु शिक्षा।

(ख) प्रौढ़ शिक्षा।

(ग) बाल शिक्षा।

(घ) बालिका शिक्षा।

(iv) आज के प्रगतिशील युग में समय के साथ कौन नहीं चल सकता है?

(क) अशिक्षित।

(ख) शिक्षित।

(ग) विद्वान।

(घ) लेखक।

(v) योग्यता के साथ-साथ समझ पूछ व्यक्ति किस की सहायता से पैदा कर सकता है?

(क) सत्य की।

(ख) सहयोग की।

(ग) शिक्षा की।

(घ) निर्देश की।

2. नीचे दो काव्यांश दिए गए हैं। किसी एक काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए- 1x5=5

शैशव के सुन्दर प्रभात का
मैंने नव विकास देखा।
यौवन की मादक लाली में
जीवन का हुलास देखा।।

जग-झंझा-झकोर में
आशा-लतिका का विलास देखा।
आकांक्षा, उत्साह, प्रेम का
क्रम-क्रम से प्रकाश देखा।।

जीवन में न निराशा मुझको
कभी रुलाने को आयी।
जग झूठा है यह विरक्ति भी
नहीं सिखाने को आयी।।

अरिदल की पहिचान कराने
नहीं घृणा आने पायी।
नहीं अशान्ति हृदय तक अपनी
भीषणता लाने पायी।।

(i) कवि को कौन सी विरक्ति सिखाने के लिए नहीं आई?

(क) जंग सच्चा है।

(ख) जग झूठा है।

(ग) सहयोग।

(घ) सफलता।

(ii) दुश्मनों की पहचान कराने के लिए कौन नहीं आने पाई?

(क) सत्यता।

(ख) संबंध।

(ग) घृणा।

(घ) सहयोग।

(iii) कभी को जीवन में रुलाने के लिए कौन नहीं आई?

(क) प्रत्याशा।

(ख) आशा।

(ग) हताशा।

(घ) निराशा।

(iv) आकांक्षा, उत्साह और प्रेम का

क्रम-क्रम से कवि ने क्या देखा।।

(क) प्रकाश।

(ख) अंधकार।

(ग) रूपक।

(घ) बदलाव।

(v) यौवन की मादक लाली में कवि ने हुलास देखा?

(क) मृत्यु का।

(ख) मिलन का।

(ग) जीवन का।

(घ) विक्षोभ का।

अथवा

हरी घास पर बिखेर दी हैं
ये किसने मोती की लड़ियाँ?
कौन रात में गूँथ गया है
ये उज्ज्वल हीरों की करियाँ?

जुगनू से जगमग जगमग ये
कौन चमकते हैं यों चमचम?
नभ के नन्हें तारों से ये
कौन दमकते हैं यों दमदम?

लुटा गया है कौन जौहरी

अपने घर का भरा खज़ाना?
पत्तों पर, फूलों पर, पगपग
बिखरे हुए रतन हैं नाना।

बड़े सवेरे मना रहा है
कौन खुशी में यह दीवाली?
वन उपवन में जला दी है
किसने दीपावली निराली?

जी होता, इन ओस कणों को
अंजली में भर घर ले आऊँ?
इनकी शोभा निरख निरख कर
इन पर कविता एक बनाऊँ।

(i) पोस्ट करो को अंजलि में भरकर कवि कहां लाना चाहता है?

(क) विद्यालय।

(ख) घर।

(ग) बाजार।

(घ) उपवन।

(ii) कवि किनकी शोभा देखकर कविता बनाने की बात कह रहा है?

(क) फूलों की।

(ख) खेतों की।

(ग) ओस कणों की।

(घ) कलियों की।

(iii) सुबह-सुबह खुशी में क्या मनाने की बात कही जा रही है?

(क) ईद।

(ख) वैशाखी।

(ग) होली।

(घ) दीपावली।

(iv) पत्तों पर और फूलों पर पगपग

कौन बिखरे हुए हैं

(क) ओस।

(ख) पानी।

(ग) रतन।

(घ) मधु।

(v) मोती कि लड़ियां किसी ने कहां बिखेर दी हैं?

(क) पौधों पर।

(ख) फूलों पर।

(ग) सूखी घास पर।

(घ) हरी घास पर।

खंड-ख

. (व्यावहारिक व्याकरण) अंक-16

3. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 1x4=4

(i) "अपमान" शब्द में उपसर्ग है-

(क) अप।

(ख) अ।

(ग) अपम।

(घ) अपमा।

(ii) "अधि" उपसर्ग वाला शब्द है-

(क) अधिवक्ता।

(ख) अधिक।

(ग) अधीर।

(घ) अधिक।

(iii)"सनसनाहट" शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है-

(क) हट।

(ख) सनाहट।

(ग) आहट।

(घ) सन।

(iv) "इक" प्रत्यय वाला शब्द है-

(क) प्रत्याशित।

(ख) सामाजिक।

(ग) सम्मानित।

(घ) बाधित।

(v) "निरपराध" शब्द में मूल शब्द है-

(क) निर।

(ख) पराध।

(ग) राध।

(घ) अपराध।

4. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 1x4=4

(i) "धनहीन" शब्द में समास होगा-

(क) द्विगु।

(ख) द्वंद्व।

(ग) तत्पुरुष।

(घ) कर्मधारय।

(ii) "नीलांबर" समस्त पद का सही विग्रह होगा-

(क) नीला नभ।

(ख) नीला है जो अंबर।

(ग) नीलाकाश।

(घ) नीलगगन।

(iii) "दो पहरों का समाहार" का समस्त पद होगा-

(क) दो शहर।

(ख) दो प्रहार।

(ग) दो पहरे।

(घ) दोपहर।

(iv) "द्वंद्व समास" का सही उदाहरण है-

(क) उलटा-सीधा।

(ख) उलटा।

(ग) सीधा।

(घ) समान।

(v) "गज जैसे आनन वाला (गणेश)" यह समास विग्रह किस समास का उदाहरण है-

(क) अव्ययीभाव।

(ख) द्विगु।

(ग) तत्पुरुष।

(घ) बहुव्रीहि।

5. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 1x4=4

(i) "मनोज विद्यालय नहीं जाता है" अर्थ की दृष्टि से वाक्य होगा-

(क) विधानवाचक।

(ख) निषेधवाचक।

(ग) प्रश्नवाचक।

(घ) आज्ञावाचक।

(ii) "काश! विराट पत्र लिखता" अर्थ की दृष्टि से वाक्य होगा-

(क) इच्छावाचक।

(ख) संदेहवाचक।

(ग) विस्मय वाचक।

(घ) आज्ञावाचक।

(iii) प्रश्नवाचक वाक्य का सही उदाहरण होगा-

(क) मनोज बाजार गया।

(ख) मनोज बाजार नहीं गया।

(ग) क्या मनोज बाजार गया?

(घ) काश! मनोज बाजार जाता।

(iv) "मैं कल पार्क गया था" वाक्य का प्रश्नवाचक वाक्य में सही रूपांतरण होगा-

(क) काश! मैं कल पार्क जाता।

(ख) मैं कल पार्क नहीं गया था।

(ग) मैं कल पार्क क्यों गया था?

(घ) मैं कल पार्क जाऊंगा।

(v) आज्ञावाचक वाक्य का सही उदाहरण होगा -

(क) आप यहां से चले जाइए।

(ख) क्या आप जाना चाहते हैं?

(ग) आप क्यों जाना चाहते हैं?

(घ) आप कहां जाना चाहते हैं?

6. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 1x4=4

(i) निम्नलिखित पंक्तियों में से अनुप्रास अलंकार पहचानिए

(क) देख लो साकेतदेख लो साकेत नगरी है सुबरन को ढूंढत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर।

(ग चमचम चपला चमकी।

(घ) आए महंत वसंत।

(ii) उत्प्रेक्षा अलंकार का सही उदाहरण है-

(क) पाहुन ज्यों आए हो गांव में शहर के।,

(ख) देख लो साकेत नगरी है यहां।

(ग) सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।

(घ) मन का मनका फेर।

(iii) निम्नलिखित मैं रूपक अलंकार होगा-

(क) फूलों के आस पास रहते हैं।

फिर भी कांटे उदास रहते हैं।

(ख) पीपर पात सरिस मन डोला।

(ग) मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।

(घ) मेघ आए बड़े बनठन के संवर के।

(iv) यमक अलंकार का सही उदाहरण है-

(क) कुटिल, कुचाल, कुकर्म छोड़ दें।

(ख) नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे।

(ग) बरसत बारिद बूंद।

(घ) तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है।

(v) जहां एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले वहां कौन सा अलंकार होगा-

(क) यमक।

(ख) श्लेष।

(ग) उपमा।

(घ) अनुप्रास।

खंड – ग

(पाठ्य पुस्तक) अंक-14

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए- 1x5=5

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गँराव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ में सने हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है। झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद हो गया।दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था। घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा- बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्त्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु वीरों को अभिनंदन पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड, कोई चोकर कोई भूसी। दोनों मित्रों का जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत जाने पर भी उन्हें खाने के लिए एक तिनका भी न मिला था। उन्हें समझ ही नहीं आता था कि यह कैसा स्वामी है, इससे तो गया ही अच्छा था। कम से कम रूखा-सूखा तो देता ही था। यहाँ कई भैसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे पर किसी के सामने चारा न था। सभी जमीन पर मुर्दों की तरह पड़े थे।इनमें कई तो इतने कमजोर हो थे कि खड़े भी नहीं हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक पर टकटकी लगाए ताकते रहे पर कोई चारा लेकर नहीं आया। थक-हार कर दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की। पर इससे उन्हें क्या तृप्ति मिलती।

(i) गांव के लड़के वालों का स्वागत किस तरह कर रहे थे?

(क) उछल कूद कर।

(ख) झूम झूम कर।

(ग) नाच गाकर।

(घ) तालियां बजा बजाकर।

(ii) सारा दिन फाटक पर टकटकी लगाए कौन देखते रहे?

(क) दोनों मित्र।

(ख) दोनों भाई।

(ग) गया।

(घ) झूरी।

(iii) थक-हारकर दोनों ने किस की नमकीन मिट्टी चटनी शुरू कर दी?

(क) छत की।

(ख) आंगन की।

(ग) दीवार की।

(घ) दरवाजे की।

(iv) झूरी ने प्रातः काल दोनों बैलों को कहां खड़े देखा?

(क) तालाब पर।

(ख) बाग में।

(ग) चरनी पर।

(घ) खेत पर।

(v) बैलों को देखकर झूरी की क्या दशा हुई?

(क) वह स्नेह से गद्गद होगया।

(ख) वह गुस्से से लाल हो गया।

(ग) वह परेशान हो गया।

(घ) वह नाराज़। हो गया।

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए- 1x2=2

(i) ल्हासा की ओर पाठ में सर्वोच्च स्थान पर क्या था?

(क) डाँडे के देवता का स्थान था।

(ख) चीनी किला।

(ग) पहाड़।

(घ) सुनसान जगह।

(ii) ल्हासा की ओर पाठ में लेखक के घोड़े की क्या दशा थी?

(क) बहुत धीरे-धीरे चल रहा था।

(ख) तेज तेज चल रहा था।

(ग) भाग रहा था।

(घ) बैठ गया था।

9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए - 1x5=5

मानसरोवर सुभर जल।

हंसा केलि कराहिं ।

मुकताफल मुकता चुगैं,
अब उड़ि अनत न जाहिं।।

प्रेमी ढूंढत मैं फिरौं,
प्रेमी मिले न कोइ ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै,
सब विष अमृत होइ।।

काबा फिर काशी भया,
रामहि भए रहीम।
मोट चून मैदा भया ,
बैठि कबीरा जीम।।

ऊँचे कुल का जनमिया,
जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलश सुरा भरा ,
साधू निंदा सोई।।

(i) मनुष्य कब महान कहलाता है? (क) जब वह ऊंचे कुल में जन्म लेता है ।

(ख) जब उसके मां बाप धनी होते हैं। (ग) जब वह अपने धर्म सम्प्रदाय को बढ़ावा देता है।

(घ) जब उसके काम ऊंचे होते हैं।

(ii) कबीर दास जी ने साधु निंदा को किसके समान बताया है?

(क) स्वर्ण कलश में सुरा के समान।

(ख) स्वर्ण कलश में जल के समान।

(ग) स्वर्ण कलश में अमृत के समान।

(घ) स्वर्ण कलश में विष के समान।

(iii) कबीर दास जी काबा को किसके समान बता रहे हैं?

(क) प्रयाग।

(ख) गया।

(ग) काशी।

(घ) सारनाथ।

(iv) कबीर दास जी किस को ढूंढते हुए फिर रहे हैं?

(क) शत्रु।

(ख) साथी।

(ग) दोस्त।

(घ) प्रेमी।

(v) हंस कहां के जल में किलोल कर रहे हैं?

(क) गंगा।

(ख) यमुना।

(ग) मानसरोवर।

(घ) सरयू।

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिये 1x2=2

(i) वाख कविता में कच्चे धागे की रस्सी की तुलना किससे की गई है?

(क) घोडे की रस्सी से।

(ख) सांसो से।

(ग) कुएं की रस्सी से।

(घ) जीवन से।

(ii) वाख कविता में नाव किसे माना गया है?

(क) पानी के जहाज को।

(ख) पानी के किसी जीव को।

(ग) जीवन को।

(घ) शरीर को।